Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

हिंदी साहित्य में सिद्ध साहित्य का योगदान

Sujeet Kumari*

M.A. Hindi, UGC- NET

सार – ***हिंदी साहित्य परंपरा में सिद्ध साहित्य का महत्वपूर्ण योगदना रहा है। सिद्ध साहित्य ने भक्तिकाल की सगुण और निर्गुण दोनों धाराओं को प्रभावित किया। सिद्धों का सम्बन्ध बौद्ध धर्म की बज्रयानी शाखा से है। ये भारत के पूर्वी भाग में सक्रिय थे। इनकी संख्या 84 मानी जाती है जिनमें सरहप्पा, शवरप्पा, लुइप्पा, डोम्भिप्पा, कुक्कुरिप्पा आदि मुख्य हैं। सरहप्पा प्रथम सिद्ध कवि थे। इन्होंने जातिवाद और बाह्याचारों पर प्रहार किया। देहवाद का महिमा मण्डन किया और सहज साधना पर बल दिया। ये महासुखवाद द्वारा ईश्वरत्व की प्राप्ति पर बल देते हैं।***

----------X----------

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार- चूंकि जैनियों, सिद्धों, नाथों की रचनाएं धार्मिक भावना में लिखी गई थीं इसलिए साहित्य के मूल्य तक नहीं पहुंचती थीं। इसलिए उन्हें प्रथम काल की साहित्यिक परिधि में सम्मिलित नहीं किया गया।[1]

बौद्ध धर्म के वज्रयान तत्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य देश भाषा (जनभाषा) में लिखा गया वही सिद्ध साहित्य कहलाता है। यह साहित्य बिहार से लेकर असम तक फैला था। राहुल संकृत्यायन ने 84 सिद्धों के नामों का उल्लेख किया है जिनमें सिद्ध 'सरहपा' से यह साहित्य आरम्भ होता है। बिहार के नालन्दा विद्यापीठ इनके मुख्य अड्डे माने जाते हैं। बाद में यह 'भोट' देश चले गए। इनकी रचनाओं का एक संग्रह महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने बांग्ला भाषा में 'बौद्धगान-ओ-दोहा' के नाम से निकाला। सिद्धों की भाषा में 'उलटबासी' शैली का पूर्व रुप देखने को मिलता है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सिद्ध साहित्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि, "जो जनता तात्कालिक नरेशों की स्वेच्छाचारिता, पराजय त्रस्त होकर निराशा के गर्त में गिरी हुई थी, उनके लिए इन सिद्धों की वाणी ने संजीवनी का कार्य किया। साधना अवस्था से निकली सिद्धों की वाणी 'चरिया गीत / चर्यागीत' कहलाती है।[2]

हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं कि –"धार्मिक प्रेरणा या आध्यात्मिक उपदेश होना काव्यत्व का बाधक नहीं समझा जाना चाहिए"[3]

सिद्ध साहित्य को मुख्यतः निम्न तीन श्रेणियों में विभाजित किया जाता है:-

(१) नीति या आचार संबंधित साहित्य

(२) उपदेश परक साहित्य

(३) साधना सम्बन्धी या रहस्यवादी साहित्य

सिद्ध सरहपा (सरहपाद, सरोजवज्र, राहुल भद्र) से सिद्ध सम्प्रदाय की शुरुआत मानी जाती है। यह पहले सिद्ध योगी थे। जाति से यह ब्राह्मण थे। राहुल सांकृत्यायन ने इनका जन्मकाल 769 ई. का माना, जिससे सभी विद्वान सहमत हैं। इनके द्वारा रचित बत्तीस ग्रंथ बताए जाते हैं जिनमे से 'दोहाकोश' हिन्दी की रचनाओं मे प्रसिद्ध है। इन्होने पाखण्ड और आडम्बर का विरोध किया तथा गुरू सेवा को महत्व दिया।

इनके बाद इनकी परम्परा को आगे बढ़ाने वाले प्रमुख सिद्ध हुए हैं क्रमश: इस प्रकार हैं :-

शबरपा : इनका जन्म 780 ई. में हुआ। यह क्षत्रिय थे। सरहपा से इन्होंने ज्ञान प्राप्त किया। 'चर्यापद' इनकी प्रसिद्ध पुस्तक है। इनकी कविता का उदाहरण देखिये-

हेरि ये मेरि तइला बाड़ी खसमे समतुला

षुकड़ये सेरे कपासु फुटिला।

तइला वाड़िर पासेर जोहणा वाड़ि ताएला

फ़िटेली अंधारि रे आकासु फुलिआ॥

www.ignited.in

लुइपा : ये राजा धर्मपाल के राज्यकाल में कायस्थ परिवार में जन्मे थे। शबरपा ने इन्हें अपना शिष्य माना था। चौरासी सिद्धों में इनका सबसे ऊँचा स्थान माना जाता है। उड़ीसा के तत्कालीन राजा और मंत्री इनके शिष्य हो गए थे।

डोम्भिया : मगध के क्षत्रिय वंश में जन्मे डोम्भिया ने विरूपा से दीक्षा ग्रहण की थी। इनका जन्मकाल 840 ई. रहा। इनके द्वारा इक्कीस ग्रंथों की रचना की गई, जिनमें 'डोम्बि-गीतिका', 'योगाचर्या' और 'अक्षरद्विकोपदेश' प्रमुख हैं।

कण्हपा : इनका जन्म ब्राह्मण वंश में 820 ई. में हुआ था। यह कर्नाटक के थे, लेकिन बिहार के सोमपुरी स्थान पर रहते थे। जालंधरपा को इन्होंने अपना गुरु बनाया था। इनके लिखे चौहत्तर ग्रंथ बताए जाते हैं। यह पौराणिक रूढ़ियों और उनमें फैले भ्रमों के खिलाफ थे।

कुक्कुरिपा : कपिलवस्तु के ब्राह्मण कुल में इनका जन्म हुआ। चर्पटीया इनके गुरु थे। इनके द्वारा रचित 16 ग्रंथ माने गए हैं।[4]

सिद्ध कवियों की रचनाएं-

सरहपा : दोहाकोश, उपदेश गीति, द्वादशोपदेश, डाकिनीगुहयावज्रगीति, चर्यागीति, चित्तकोष अजव्रज गीति । इनके कुल 32 ग्रंथ हैं ।

शबरपा : चर्यापद, सितकुरु, वज्रयोगिनी, आराधन-विधि ।

लुइपा : अभिसमयविभगं, तत्वस्वभाव दोहाकोष, बुद्धोदय, भगवदअमभिसय, लुइपा-गीतिका ।

डोम्भिपा : अक्षरद्विकोपदेश, डोंबि गीतिका, नाड़ीविंदुद्वारियोगचर्या । इनके कुल २१ ग्रंथ हैं ।

कण्हपा : योगरत्नमाला, असबधदृष्टि, वज्रगीति, दोहाकोष, बसंत तिलक, कान्हपाद गीतिका ।

दारिकपा : तथतादृष्टि, सप्तमसिद्धांत, ओड्डियान विनिर्गत-महागयहयातत्वोपदेश ।

शांतिपा : सुख दुख द्वयपरित्याग ।

तंतिपा : चतुर्योगभावना ।

विरुपा : अमृतसिद्ध, विरुपगीतिका, मार्गफलान्विताव वादक ।

भुसुकपा : बोधिचर्यावतार, शिक्षा-समुच्चय ।

वीणापा : वज्रडाकिनी निष्पन्नक्रम ।

कुकुरिपा : तत्वसुखभावनासारियोगभवनोपदेश, स्रवपरिच्छेदन ।

मीनपा : बाहयतरंबोधिचितबंधोपदेश।

महीपा : वायुतत्व, दोहा गीतिका।

कंबलपाद : असबध दृष्टि, कंबलगीतिका।

नारोपा : नाडपंडित गीतिका, वज्रगीति,।

गोरीपा : गोरखवाणी, पद-शिष्य दर्शन

आदिनाथ : विमुक्त मर्जरीगीत, हुंकारचित बिंदु भावना क्रम।

तिलोपा : करुणा भावनाधिष्ठान, महा भद्रोपदेश।

इनकी रचनाओं का एक संग्रह महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने बांग्ला भाषा में 'बौद्धगान-ओ-दोहा' के नाम से निकाला। सिद्धों की भाषा में 'उलटबासी' शैली का पूर्व रुप देखने को मिलता है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने सिद्ध साहित्य की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि "जो जनता तात्कालिक नरेशों की स्वेच्छाचारिता, पराजय त्रस्त होकर निराशा के गर्त में गिरी हुई थी, उनके लिए इन सिद्धों की वाणी ने संजीवनी का कार्य किया। साधना अवस्था से निकली सिद्धों की वाणी 'चरिया गीत / चर्यागीत' कहलाती है।[5]

सरहपा (769 ई.), शबरपा (780 ई.), भूसुकपा (नवीं सदी), लुइपा (830 ई-शबरपा के शिष्य), विरूपा (9वीं सदी), डोम्भिपा (840 ई.), दारिकपा (9वीं सदी), गंडरिपा (9वीं सदी), कुकुरिपा (9वीं सदी), कमरिपा (9वीं सदी), कण्हपा (820 ई., जालन्धरपा के शिष्य), गोरक्षपा (9वीं सदी), तिलोपा (9वीं सदी)

राहुल सांकृत्यायन ने आदिकाल को सिद्ध सामंत युग कहा है। उनका कहना है कि- राहुल सांकृत्यायन को इस काल में दो प्रवृत्तियां लक्षित होती हुई- सिद्धों की बानी और सामंतों की स्तुति।[6] दरअसल मंत्रों की सिद्धि चाहने वाले सिद्ध कहलाए। सिद्धों का समय 797ई. से लेकर 1257ई. तक माना गया है। श्रीपर्वत सिद्धों का प्रधान केंद्र रहा है। सिद्धों के विचारदर्शन के प्रमुख ग्रंथ- साधन समुच्चय, आदिकर्मप्रदीप और मंजुश्री मूलकल्प आदि प्रमुख ग्रंथ श्रीपर्वत पर लिखे गए हैं। सन्

www.ignited.in

1907 में महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने सर्वप्रथम नेपाल में सिद्ध साहित्य का पता लगाया था।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ. 8, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. https://hi.wikipedia.org/wiki
3. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का आदिकाल, पृ. 11, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. https://vimisahitya.wordpress.com/
5. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिंदी साहित्य का आदिकाल, पृ. 23, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
6. राहुल सांकृत्यायन, हिंदी काव्यधारा, पृ. 45, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

Corresponding Author

Sujeet Kumari*

M.A. Hindi, UGC- NET

chhikara.sunil1982.sc@gmail.com